

श्री गायत्री मंत्र
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ॐ
सबकी रक्षा करने वाला

भूः
जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रथि और स्वयंभू है ।

भुवः
जो सब दुखों से रहति ।

स्वः
जो नानावधि जगत् में व्यापक होके सब का धारण करता है ।

सवितुः
जो सब जगत् का उत्पादक और सब ऐश्वर्य का दाता है ।

देवस्य
जो सब सुखों का देनेहारा और जसिकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं ।

वरेण्यम्
जो स्वीकार करने योग्य अतशिरेष्ठ

भर्गः
शुद्धस्वरूप और पवतिर करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है ।

तत्
उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग

धीमहि
धारण करें कसि प्रयोजन के लयि कि

यः
जो सवति देव परमात्मा

नः
हमारी

धयोः
बुद्धियों को

प्रचोदयात्
प्रेरणा करे अर्थात बुरे कामों से छुड़ा कर अच्छे कामों में प्रवृत्त करें ।